शासन पद्धति

नहजुल बलाग़ा से उद्घृत

उर्दू अनुवादकः आयतुल्लाह सैय्यद काज़िम नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़
हिन्दी अनुवादकः जनाब जौनुल हसन सौंराहवीं इलाहाबादी

बिस्मिल्ला हिर्रमार्निरहीम

यह वह अध्यादेश है जो अल्लाह के बन्दे हज़रत अली[अ०] ने मालिक इब्ने हारिस अश्तर के लिए लिखा है, उस समय जब उन्हें मिस्र का राज्य वहाँ के राजस्व का प्रबन्ध, आक्रमण करने वालों से सुरक्षा, वहाँ की ज़मीन की पैदावार और निवासियों की देख-रेख तथा उनकी सेवा के कार्य सौंपे हैं। उन्हें आदेश है कि "अल्लाह से डरते रहें, उसकी आधीनता को हर मामले में परम् आवश्यक समझें और उसके आदेश जो क़ुर्आन और हदीस से साबित होते हैं, जिनके पालन करने पर प्रत्येक मनुष्य के सौभाग्य की निर्भता और उनके इन्कार और विरोध ही पर दुर्भाग्य आधारित है, उन आदेशों का पालन अपना सिद्धांत बना ले और अपने हाथ, दिल और ज़बान से अल्लाह की मदद करते रहें इसलिए कि अल्लाह उसको मदद देने का ज़िम्मेदार है जो उसके उद्देश्यों का पुष्टीकरण करे और उसको इज़्ज़त देता है जो उसकी इज़्ज़त का ख़्याल रखे। इसके अलावा उन्हें कि वह अपनी अश्लील इच्छाओं को बिल्कुल समाप्त कर दें और भावनाओं को रोके रखें इसलिए कि भावनाऐं ही मनुष्य को बुराईयों की ओर बुलाती हैं जब तक कि अल्लाह की मेहरबानी उसकी परिस्थिति में कार्यशील न हो।"

ऐ मालिके इब्ने अशतर! तुमको मालूम होना चाहिए कि मैंने तुम्हें मुल्क पर (हाकिम बनाकर) भेजा है, जहाँ तुम्हारे पहले बहुत सी अन्यायी और अत्याचारी हुकूमतें क़ायम रह चुकी हैं। निःसदेंह लोग तुम्हारे कामों को उसी प्रकार ध्यान से देखेगें जिस प्रकार तुम अपने पहले के हाकिमों के मामलात को देखा करते थे और तुम्हारे कार्य पद्धति पर इसी प्रकार नुक्ताचीनियाँ करेगें जैसी तुम उन हुकूमतों के कामों में किया करते थे और यह समझ लो कि नेक काम करने वालों की पहचान उन्हीं चर्चों द्वारा की जाती है जो अल्लाह उनके लिए अपने बन्दों की ज़बान पर जारी करता है, इसलिए तुम्हारी नज़र में परमप्रिय संचित कोष अच्छे कामों का संचित कोष होना चाहिए। अतः तम अपनी इच्छाओं को काबू में रखो और अपनी कामुकता को नाजायज़ चीज़ों से, क्योंकि कामुकता का विरोध उसकी पसन्द और नापसन्द वस्तुओं में भी उसके साथ न्याय है और अपने दिल को रियाया पर मेहरबानी, उनसे मुहब्बत और उनके साथ उदार होने का आदी बनालो और ख़बरदार उनके लिए फाड़ खाने वाले जानवर न बन जाना कि उनके खा जाने का मौक़ा तलाश कर रहे हो इसलिए कि तुम्हारे रियाया में दो प्रकार के लोग हैं। एक तो तुम्हारे धार्मिक भाई और दूसरे वह जो ख़ुदा के बन्दे होने की हैसियत से तुम्हारे साथ एक स्तर पर हैं। उनसे अक्सर भूल-चूक भी होगी, मजबूरियाँ भी सामने होंगी और उनके हाथों कभी जानबूझ कर और कभी ग़लती से बहुत सी ख़ताऐं भी हुआ करेंगी। ऐसे अवसरों पर तुम्हें चाहिए कि तुम उनके दामनों को क्षमा और माफ़ी की दौलत से उसी प्रकार भर दो जिस प्रकार तुम चाहते हो कि अल्लाह तुमको गुनाहों से माफ़ करने और बख़्श देने की दौलत से मालामाल कर दे। इसलिए कि तुम उनके हाकिम हो और मैं तुम्हारा हाकिम हूँ और मेरे ऊपर अल्लाह की हुकूमत है और उसी अल्लाह ने वहाँ के निवासियों की सेवा तुमसे करानी चाही है, और तुम्हारी उनके द्वारा

परीक्षा ली है। कभी अपने को अल्लाह के मुक़ाबले पर न लाओ इसलिए कि उसके प्रकोप के सामने तुम्हारी शक्ति कोई चीज़ नहीं और न तुम उसकी क्षमा और मेहरबानी से विमुक्म हो सकते हो। तुम्हें किसी को क्षमा करके लज्जित न होना चाहिए और किसी को सज़ा देकर ख़ुश न होना चाहिए और कभी किसी मामले में जल्दबाज़ी से काम न लो जब कि वक़्त में विचार कर लेने की गुंजाईश हो और कभी यह न कहना कि मुझे प्रभुता प्राप्त है और मैं शासक हूँ इसलिए जो भी मैं हुक्म दूँ उसको हर हालत में मानना चाहिए। क्योंकि यह समझना दिल में फ़साद पैदा करना, दिल को कमज़ोर बनाने और जीवन में उथल-पुथल पैदा होने और दुर्घटनाओं को क़रीब लाने का कारण है। और अगर कभी यह तुम्हारी हुकूमत और शासन तुममें गव्र या अंहकार पैदा करे तो तुरन्त तुम अपने से बलन्द अल्लाह की हुकूमत के महान होने का ध्यान और स्वयं अपने ऊपर उसकी प्रभुता के होने का उस सीमा तक कि तुम्हें सिर्फ़ अपनी जान पर इतना अधिकार नहीं है, ख़्याल कर लो, यह तुम्हारी उदारता के जोश में शान्त और तुम्हारे गर्व और अंहकार में कमी पैदा कर देगा और तुम्हारी गई हुई अक़्ल और खोये हुए होशो हवास को फिर बुला लेगा।

देखो कभी अल्लाह से उसकी बुज़ुर्गी में मुक़ाबला और उसकी महानता और प्रकोप में बराबरी की कोशिश न करना क्योंकि अल्लाह हर घमन्डी और उद्दण्ड के सर को झुका देता है। और हर अंहकारी को ज़लील और बदनाम बना देता है। अल्लाह के अधिकारों में उससे न्याय करो और उसके बन्दों के जो अधिकार स्वयं तुम पर या तुम्हारे अज़ीज़ों और नातेदारों या तुम्हारे ख़ास आदमियों पर हों उन सबको अदा करके उसके साथ इन्साफ़ करो। इसलिए कि तुमने ऐसा न किया तो तुम अत्याचारी और क्रूर समझे जाओगे और जिसने अल्लाह के बन्दों पर अत्याचार किया तो बन्दों के स्थान पर प्रतिवादी अथवा विरोधी बन जाता है और जिसका विरोधी अल्लाह हो जाये तो अल्लाह उसकी प्रभुता को मिटा देगा और अल्लाह के मुक़ाबले में वह लड़ाई लड़ने वाला होगा। जब तक कि वह अत्याचारी अपने बुरे कर्मों को छोड़ न दे और अल्लाह के हुज़ूर (सामने) में तौबा (लज्जित होना) न कर ले। अल्लाह की दी हुई चीज़ो को समाप्त कर देने वाली और उसके प्रकोप को शीघ्र लाने वाली अत्याचार और क्रूरता पर जमे रहने से ज़्यादा कोई वस्तु नहीं है क्योंकि अल्लाह पीड़ितों और अत्याचार सहने वालों की फ़रियाद और पुकार को ख़ूब सुनता है और वह अत्याचारियों के घात में लगा रहता है।

ऐ मालिक! तुम्हारे लिए सारे कामों में परम् प्रिय वह होना चाहिए जो उनमें हक़ के एतबार से मोतदिल हो और न्याय के अन्तर्गत लोकप्रिय और विश्वव्यापी हो, और अधिक से अधिक प्रजा के लाभ को पूरा करने वाला हो, क्योंकि जनता की नाख़ुशी बड़े आदमियों की ख़ुशी को भी बेकार कर देती है और बड़े आदमियों की ख़ुशी जनता की ख़ुशी के साथ छोड़ी जा सकती है और बड़े आदमियों से ज़्यादा सारी जनता में कोई एक भी ऐसा नहीं है जो हाकिम पर सम्पन्नता की हालत में ज़्यादा बोझ डालने वाला और मुसीबतों के समय पर हाकिम की सबसे कम मदद करने वाला, न्याय को बुरा समझने वाला और बड़े हट के साथ अपनी मांगों को पेश करने वाला, बख़्शिश और मेहरबानी पर सबसे कम कृतज्ञता प्रकट करने वाला और समय की प्रतिकूल परिस्थितियों और घटनाओं पर सबसे कम संतोष करने वाला हो। लेकिन धर्म को शक्तिवान बनाने का असली कारण और मुसलमानो के संगठन का असली केन्द्र और मुल्क और राष्ट्र पर दुश्मनों से मुकाबला करने वाली केवल साधारण जनता होती है। इसलिए ज़रूरी है कि तुम्हारे ध्यान उसके लिए और तुम्हारा झुकाव उनकी ओर हो और तुम्हारी प्रजा में सबसे ज़्यादा दूर, तुमसे और तुम्हारे गुस्से और क्रोध का सबसे अधिक भागी वह होना चाहिए जो सबसे अधिक लोगों की बुराईयों की खोज में रहता हो। क्योंकि वास्तव में अक्सर व्यक्तियों में ऐब और बुराईयाँ होती हैं जिनके छिपाने का सबसे ज़्यादा हक़दार उस समय का हाकिम है। इसलिए जो बातें तुम्हारी आँखों से ओझल हैं उनकी खोज न करो क्योंकि तुम्हारा कर्तव्य उन्हीं वस्तुओं का सुधार है जो तुम पर ज़ाहिर हो। रह गई वह बातें जो तुमसे छिपी हुई हैं,

उनका फ़ैसला अल्लाह के ज़िम्मे है। इसलिए जहाँ तक हो सके ऐबों को छुपाने की कोशिश करो ताकि ख़ुदा भी छिपाये रखे तुम्हारे उन ऐबों को जो तुम अपनी प्रजा से छिपाये रखना चाहते हो और देखो अपने दिल से रियाया के लिए डाह और अदावत की हर गिरह खोल दो ओर दुश्मनी के हर रिश्ते को तोड़ दो और हर ऐसे कामों से नादान बने रहो जो तुम्हारे लिए उचित नहीं है। अभी कभी किसी की चुग़लख़ोर की चुग़लख़ोरी को जल्दी से सही न समझ लेना इसलिए चुग़लख़ोर सच्ची बातों का वास्तव में बुराई चेतने वाला होता है। यद्यपि वह भलाई चेतने वाला बनकर सामने आता है और कभी कंजूस को अपना सलाहकार न बनाना इसलिए कि वह तुम्हें लोगों के साथ भलाई और बख़्शिश करने से रोकेगा और ख़ज़ाने के ख़ाली हो जाने का ख़ौफ़ दिलायेगा और कभी किसी डरपोंक से सलाह-मशविरा न लो क्योंकि वह बड़े मामलों में तुम्हारी हिम्मत को पस्त करेगा और न किसी लालची को मशविरे में शामिल करना इसलिए कि वह तुमको क्रूरता और अत्याचार के साथ हवस पूरी करने पर आमादा करेगा। बात यह है कि कंजूसी, बुज़-दिली और लालच ये विभिन्न आदतें हैं जिनमें एक वस्तु उभयनिष्ट है और वह अल्लाह पर भरोसा न करना।

मंत्रियों में सबसे बुरा वह होगा जो तुम्हारे पहले बुरे हाकिमों का मंत्री रह चुका हो और पापों में उसके साथ सम्मिलित रह चुका हो ऐसे लोगों को तुम्हारे ख़ास आदमियों में न होना चाहिए क्योंकि वे पापियों के सहायक और अत्याचारियों के रिश्तेदार हैं और तुम्हें उनके बजाये दूसरे व्यक्ति ऐसे मिल सकते हैं जो अपनी राय के पक्के और सूझ-बूझ के अन्तर्गत उनके समान हों लेकिन उन पर वैसे अपराधों और अत्याचारों का भार न हो। जिन्होंने किसी ज़ालिम की उसके जुल्म में मदद की हो और न किसी पापी की उसके पाप में सहायता। यह वह होंगे जो तुम्हारे लिये परेशानी के कारण न होंगे बल्कि तुम्हारे सबसे बड़े मददगार और सहायक सिद्ध होंगे तुम्हारे लिये मुहब्बत और मेहरबानी का दम भरेगें और तुम्हारे अलावा किसी दूसरे से सम्बन्ध न रखेंगे। इनको तुम अपनी सभा और तन्हाई में अपना साथी बना लो और उनमें तुम्हारा सबसे ज़्यादा पसन्द वह हो जो कड़वे सत्य को साफ़ कहने वाला और सबसे कम तुम्हारी सहायता करने वाला हो उन बातों में जिस को ख़ुदा अपने बन्दों के लिए नापसन्द करता है चाहे वह तुम्हारी इच्छाओं के कितने ही अनुसार हों और तुम सदैव संयमी और सत्यवादियों को अपने साथ रखो फिर उन्हें इसकी आदत डालो कि वह तुम्हारी प्रशंसा न करें ऐसे कामों को तुमसे संबधित करके जो वास्तव में तुमने नहीं किये हैं, इसलिए अधिक प्रशंसा और सराहना घमण्ड और उद्दण्डता की सम्भावनायें बढ़ाती हैं और देखो अच्छे कर्म और बुरे कर्म करने वाले तुम्हारे यहाँ बराबर न समझे जायें, इसलिए कि ऐसा करने में अच्छे कर्म करने वालों की अभिरुचि नेकी में कमी करना और बुरे लोगों को बुराई के कायम रखने पर आमादा करना है और हर एक के साथ बस वह व्यवहार करो जिसका वह खुद उसने अपने कर्म से अपना हक़ पैदा किया है और यह समझ लो कि राजा को अपनी प्रजा की वफ़ादारी पर भरोसा करने का कोई मान इससे बढ़कर नहीं है कि वह उनके साथ अच्छे सुलूक करे, उन पर टैक्स वगैरा के बोझ कम डाले और उनको ऐसी बुरी परिस्थितियों में न पड़ने दे जिनको वह बर्दाश्त न कर सकें। तुम्हें इस बारे में काम करने का ऐसा ढंग अपनाना चाहिए कि तुम अपनी प्रजा पर अपने व्यवहार के कारण भरोसा कर सको। इसलिए कि यह भरोसा और विश्वास तुम्हारी बड़ी तकलीफ़ (दिली उलझन) को दूर करेगा और सबसे अधिक तुम्हारे विश्वास का हक़दार केवल वही है कि जिसके साथ तुम्हारा सुलूक अच्छा रहा हो और सबसे ज़्यादा अविश्वसनीय वह है जिसके साथ तुमने सुलूक अच्छा न किया हो और देखो कभी उस अच्छे रास्ते को न छोड़ना जिस पर धर्मात्मा और बुज़ुर्ग लोग तुमसे पहले चल चुके हैं, और जिससे मुहब्बत और मेल मिलाप के रिश्ते मज़बूत होते हैं। जिसके द्वारा प्रजा का सुधार होता है और कोई ऐसा तरीक़ा न अपनाना जो उन पिछले अच्छे तरीक़ों के विपरीत हो क्योंकि इस हालत में उस अच्छे तरीक़े को स्थापित करने वालों के लिए तो सवाब (पुण्ड की बात) रह जायेगी ओर तुम पर पाप चढ़ेगा।

कि तुमने उन तरीक़ों को समाप्त कर दिया उन चीज़ों को स्थाई रखने में जिनसे तुम्हारे मुल्क का सुधार हो और जिनके द्वारा इसके पहले सारी जनता और समस्त जीवों का बन्दोबस्त ठीक रह चुका है, विद्वानो के साथ वार्तालाप, विचारों का आदान-प्रदान और ज्ञानियों तथा शिक्षित व्यक्तियों से बात चीत करना तुम्हारे लिये लाभदायक होगा।

मालूम होना चाहिए कि प्रजा की कई श्रेणियाँ हैं जिनमें से एक दूसरे के बिना ठीक नहीं हो सकती और न वह एक दूसरे से विमुक्त रह सकती हैं। उनमें एक सैनिक हैं, दूसरे साधारण और मुख्य कार्यालयों में लिखा पढ़ी करने वाले लोग हैं। तीसरे न्याय और अदालत से फ़ैसला करने वाले अदालत के हाकिम हैं चौथे मुहब्बत और मेहरबानी से इन्तज़ाम करने वाले राज्य के हाकिम हैं। पाँचवे व्यापार पेशा और दस्तकार लोग हैं। छठे टैक्स और माल गुज़ारी देने वाले मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम लोग हैं। सातवें निचले दर्जे के मुहताज फ़क़ीर और ग़रीब लोग हैं और अल्लाह ने उनमें से हर एक का एक भाग निश्चित कर दिया है जिसकी जानकारी हमारे पास सुरक्षित है।

पहले प्रकार अर्थात् फ़ौजी लोग अल्लाह की मदद से जनता की सुरक्षा का किला, राजा का आभूषण, दीन और धर्म की प्रतिष्ठा और शांति का साधन हैं और जनता का बन्दोबस्त बिना इनके ठीक नहीं हो सकता। फिर फ़ौज की ज़िन्दगी है। जनता पर लगाये गये टैक्स आदि के कारण जिसके द्वारा वह अपने दुश्मनो के मुक़ाबले पर तैयार होते हैं और इससे अपने जीवन की आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति का साधन प्राप्त करते हैं और इन दोनों प्रकार के लोगों का दारोमदार है अदालत के हाकिमों, राजकर्ताओं और कार्यालयों के कर्मचारियों पर कि उनके द्वारा सामूहिक समझौते की दस्तावेज़े मुकम्मल हों और मुश्तरका अधिकारों की सुरक्षा हो और साधारण और असाधारण समस्यायें उनके द्वारा संतोषजनक परिस्थिति में तैय पायें। फिर इन सबकी स्थापना निर्भर है हस्तकला और व्यापार पेशा लोगों पर जो इन सबके लिए जीवन के समस्त सामान और आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बाज़ारों को स्थापित करते हैं और उनको अपनी बहुत सी आवश्यकताओं को स्वयं पूर्ति करने की कठिनाई से बचा लेते हैं। सबके बाद ग़रीब और फ़क़ीरों का वर्ग है वह जिसकी सहायता और पालन पोषण करना राज्य के लिए अनिवार्य है। अल्लाह की ओर से इन सारे वर्गों के लिए सुविधाऐं उपलब्ध की गई हैं और हाकिम पर इनमे से हर एक का हक़ है उसी लिहाज़ से कि जितना वह काम करे।

सेना का सरदार उसे बनाना चाहिए जो तुम्हारे ख़्याल में खुदा और रसूल का सबसे अधिक दिल के साथ पालन करने वाला सबसे ज़्यादा पाक-साफ़, सबसे अधिक सहनशील हो। जिसको गुस्सा देर में आये और माफ़ी चाहने पर सन्तुष्ट हो जाता हो। जो कमज़ोरों पर दया करने वाला हो और ताकतवरों के साथ सख़्ती से पेश आने वाला हो, जिसको बुरी आदत जोश में न लाती हो और साहस की कमी बिठा न देती हो। फिर तुमको चाहिए कि उच्चकोटि के शरीफ़ खानदान वालों और अच्छी पुरानी परम्परा रखने वालों से सम्बन्ध स्थापित करो। फिर बहादुरों, दानियों और परोपकार करने वालों की ओर ध्यान दो क्योंकि यह लोग बुज़ुर्गी और नेकी के मालिक होते हैं फिर इनके मामलात की देखभाल इस प्रकार करते रहो कि जिस प्रकार माँ बाप औलाद का ख्याल रखते हैं और अगर इनके साथ कोई बड़ा एहसान करो तो उसको बड़ा न समझो और न किसी मेहरबानी को जो तुम उन पर किया करते हो अनावश्यक समझना चाहे वह छोटी ही बात क्यों न हो। इसलिए कि इससे उनका प्रेम तुम्हारे साथ बढ़ेगा और तुम पर उन्हें विश्वास पैदा होगा और देखो ऐसा न होने पाये कि बड़ी बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति करने को काफ़ी समझ कर तुम छोटी बातों में उनकी देखभाल छोड़ दो। इसलिए कि तुम्हारी मामूली मेहरबानी भी उनके लिए लाभदायक है और बड़ी मेहरबानी से भी वे विमुक्त नहीं हैं।

(.....जारी)